प्रिय बहनों और भाइयों,

मैं यहां पहले पी परमेश्व,रन स्मृति व्याख्यान देने के लिए आप लोगों के बीच उपस्थित होकर वास्तहव में सम्मानित महसूस कर रहा हूं। श्री परमेश्वकरनजी कई लोगों के लिए एक आदर्श और बहुआयामी व्यक्तित्व धनी थे। वह एक महान लेखक , वक्तार, कवि और सामाजिक दार्शनिक थे जिन्होंने अपने राष्ट्रवादी मिशन को आगे बढ़ाने के लिए अथक परिश्रम किया और इसे उन्होंने अपने जीवन का एक मिशन बना लिया।

श्री परमेश्वंरनजी ने अपने लेखन , भाषण एवं अन्य बौद्धिक गतिविधियों के जरिये केरल में बौद्धिक प्रवचन के स्वर और आशय को बदल दिया। उन्होंने युवाओं के बीच स्वामी विवेकानंद, श्री अरबिंदो , श्री नारायण गुरु और पंडित दीन दयाल उपाध्यादय के विचारों और शिक्षाओं को विस्तार से बताया। केरल में रामायण मास (जुलाई - अगस्त) मनाने की पुरानी परंपरा को पुनर्जीवित करने में उनका महत्वपूर्ण योगदान रहा जो अब एक लोकप्रिय त्योहार बन गया है।

श्री परमेश्वनरनजी निस्संदेह केरल के उत्कृष्ट व्य क्तित्वक रहे हैं। केरल एक ऐसा राज्य है जहां उन महान बुद्धिजीवियों की समृद्ध विरासत रही है जिन्होंवने सांस्कृतिक जागृति एवं आध्यात्मिक उत्थान के लिए उल्लेधखनीय कार्य किया।

8वीं शताब्दी में जगद्गुरु आदि शंकराचार्य ने अद्वैत वेदांत के दर्शन के माध्यम से विविध विचारों और प्रथाओं को एकीकृत किया। गीता जो हमारी बौद्धिक परंपरा में सुप्त पड़ी थी, उसे श्री शंकराचार्य ने अद्वैत के अपने शानदार दर्शन के साथ नए सिरे से पुनर्स्थाथपित किया। अद्वैत कोई नई संप्रदाय नहीं थी बल्कि उसका स्रोत उपनिषद था।

बाद में, रामानुज और माधव जैसे आचार्यों ने भी महान समाज सुधारक के तौर अपनी भूमिका निभाई। श्रृंगेरी मठ से जुड़े संत विद्यारण्य ने विजयनगर साम्राज्य के संस्थापक हरिहर और बुक्का राय को बहुत प्रभावित किया। बाद में श्री रामकृष्ण मठ के स्वामी रंगनाथनंद, चिन्मय मिशन के स्वामी चिन्मयानंद ने भारत के आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक परंपरा के दूत के रूप में काम किया। माता अमृतानंदमयी भी उसी राह पर आगे बढ़ रही हैं।

आधुनिक काल में केरल में श्री नारायण गुरु द्वारा अद्वैत को बौद्धिक एवं सामाजिक दोनों सुधार के लिए एक प्रेरणा के तौर पर स्था पित किया गया। अपने प्रवचन एवं साहित्यिक दोनों कार्यों में गुरु ने अद्वैत को प्रेरणा की शक्ति के रूप में स्थावपित किया। लेकिन श्री नारायण गुरु के लिए केरल सामाजिक और बौद्धिक पतन के अंधेरे में डूब गया होगा। श्री

परमेश्वगरनजी ने अपनी पुस्तक -'श्री नारायण गुरु, पुनर्जागरण के अग्रदूत' में नारायण गुरु के जीवन और उनकी शिक्षाओं को सही परिप्रेक्ष्य में रखा है। यह पुस्तक आधुनिक समय में शांतिपूर्ण सामाजिक बदलाव के पथ-प्रदर्शक के तौर पर गुरु को उजागर करती है। यह एक विरासत है जो हमारे प्राचीन ऋषियों के साथ जुड़ी हो सकती है।

भारत विभिन्न दौर में तमाम चुनौतियों का सामना करने के बावजूद अपनी बौद्धिक परंपरा की मजबूत पृष्ठभूमि के कारण एक शाश्वत राष्ट्र या सभ्यता की इकाई के रूप में बरकरार है।

बहनों और भाइयों,

सभ्यता एवं संस्कृिति के संदर्भ में भारत की बौद्धिक परंपरा पांच हजार साल पुरानी है। यह बौद्धिक परंपरा भारत की सामाजिक तानेबाने के साथ जुड़ी हुई थी और जिसने विविधताओं के बावजूद भारत की मौलिक एकता को बनाए रखने में मदद की। वर्ष 2003 में यूनेस्को ने वैदिक परंपरा को मानवता की मौखिक एवं अमूर्त विरासत की एक उत्कृष्ट कृति के रूप में घोषित किया। प्रो. एएल बाशम जैसे विद्वानों ने पाया कि भारत एवं एशिया के अधिकांश भाग के धार्मिक एवं सांस्कृतिक जीवन संस्कृ त के दो महान महाकाव्य अथवा इतिहास महाभारत और रामायण से काफी प्रभावित रहा है। ये दोनों महाकाव्यम हिंदू विचार एवं दर्शन के आधार हैं। गंगा, सरस्वती, कावेरी, कृष्णा और गोदावरी की घाटियों में फलने-फूलने वाली भारत की बौद्धिक परंपरा पिछले पांच सदियों के दौरान पोषित और समृद्ध हुई है। यह विभिन्न उपनिषदों के साथ-साथ बौद्ध एवं जैन संप्रदायों में भी विकसित हुआ।

हम अपनी संस्कृति एवं ज्ञान परंपरा के लिए अपने वैदिक ऋषियों के आभारी हैं। ये ऋषि केवल ज्ञानी ही नहीं थे बल्कि उन्होंने महान सुधारक- कर्मयोगी के रूप में भी काम किया। उन्होंने अपने ज्ञान एवं आध्यात्मिक अनुभव का उपयोग समाज की भलाई के लिए किया। उन्होंने एक व्यवस्थित सामूहिक जीवन की परिकल्पना की जो सभी का कल्याण (सर्वभूताहितम) सुनिश्चित करता है। उन्होंने धर्म की अवधारणा- आध्यायत्मिकता के साथ मूल्यों पर आधारित व्यवहार के नियम- तैयार की।

परमेश्व रनजी ने गीता को एक व्यापक जीवन विज्ञान के रूप में लोकप्रिय बनाया जो केरल एवं शेष भारत में सामाजिक समस्याओं का समाधान प्रदान कर सकती है। इसके लिए उन्होंने कई सेमिनार, विचार-गोष्ठियों आयोजन किया और पंचायत स्तर स्वाध्याय समिति की शुरुआत की। वह संस्कृत, योग और गीता अध्ययन को एक साथ लाना चाहते थे जिसके लिए उन्होंने एक नया शब्द 'समयोगी' तैयार किया। इस संदर्भ में वर्ष 2000 में

तिरुवनंतपुरम में एक अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया जिसमें पूरे भारत से 1,500 विद्वानों, युवाओं और संतों ने भाग लिया। परमेश्वेरनजी ने केरल में विकास संबंधी मुद्दों एवं अन्य सामाजिक सांस्कृतिक समस्याओं पर चर्चा करने के लिए कई सेमिनार आयोजित किए।

परमेश्वकरनजी एक महान संस्थासपक थे। वह 1977 से 1981 के दौरान नई दिल्ली में दीनदयाल शोध संस्थान के निदेशक रहे। उन्होंने 1982 में तिरुवनंतपुरम में भारतीय विचार केंद्रम की स्थापना की और इसे केरल में एक प्रमुख अध्ययन एवं अनुसंधान केंद्र के रूप में विकसित किया। वह 1984 में कन्याकुमारी के विवेकानंद केंद्र के उपाध्यक्ष बने और 1995 में इसके अध्यक्ष बने और अपने अंतिम दिनों तक इस पद पर बरकरार रहे। उन्होंने इन सभी संस्थानों के विकास को एक नया आयाम दिया और उनके साथ जुड़े श्रमिकों और अन्य कर्मियों का मार्गदर्शन किया।

परमेश्वंरनजी ने सैकड़ों लेख प्रकाशित किए और लगभग 25 पुस्तकें लिखीं। उन्हें 'दिशाभोटथिंटे दर्शनम' नामक पुस्तक के लिए केरल साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया। वह मंथन (नई दिल्ली) और प्रगति (तिरुवनंतपुरम) जैसी पत्रिकाओं के संपादक थे। वह मासिक पत्रिका 'युवा भारती' और विवेकानंद केंद्र की त्रैमासिक पत्रिका 'विवेकानंद केंद्रम पत्रिका' के संपादक भी थे। राष्ट्र के प्रति उनकी सेवा के लिए उन्हें 2004 में पद्म श्री और 2018 में पद्म विभूषण के अलावा कई राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। परमेश्विरनजी ने काफी युवाओं को लेखन एवं शोध के क्षेत्र से जोड़ा।

वह 1957 से 1968 तक केरल में भारतीय जनसंघ के राज्य संगठन सचिव थे। उन्होंाने 1969 में अखिल भारतीय महासचिव और बाद में उपाध्यक्ष का पदभार संभाला। उन्हें 1975-77 के आपातकाल के दौरान जेल में रखा गया था।

परमेश्वारनजी ने अपने 70 वर्ष के पूरे सार्वजनिक जीवन में संत की तरह एक सरल एवं अनुशासित जीवन जिया। एक दूरदर्शी, नीतिज्ञ और बौद्धिक दिग्गज होने के बावजूद वह सभी के लिए सुलभ और मिलनसार थे। वह एक तपस्वी और उमदा मानवतावादी थे। उनका जीवन हमें जाति, पंथ, क्षेत्र, धर्म आदि सभी में राष्ट्र को सर्वोपरि रखने के लिए प्रेरित करता है।

मैं वर्तमान पीढ़ी से श्री परमेश्वतरनजी के दिखाए मार्ग पर चलने और एक मजबूत , खुशहाल और समृद्ध भारत बनाने का आह्वान करता हूं। एक ऐसा भारत जो जातिवाद और भ्रष्टाचार

जैसी सामाजिक बुराइयों से मुक्त हो... एक ऐसा भारत जो अपने समृद्ध सांस्कृतिक और आध्यासत्मिक विरासत पर गर्व का अनुभव करे।

धन्यावाद
जय हिंद।